International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 6 Issue 12, December 2016
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

# साहित्य का समाजशास्त्र – एक समाजशास्त्रीय विवेचन

डॉ. जगजीत सिंह कविया
व्याख्याता समाजशास्त्र
राजकीय लोहिया महाविद्यालय चूरू

आरिकाल में मनुष्य अपनी आवश्यकता पूर्ति के लिए समूह में रहता रहा है उसके आपसी व्यवहार एवं संबंधों से समाज का निर्माण हुआ और वे सामाजिक प्राणी कहलाया।

साइटिका समाजशास्त्र साहित्य समाज के अध्ययन से संबंधित है साहित्य के समाजशास्त्री अध्ययन की देसी से साहित्य समाज के संबंध पर 17–18 वीं सदी से समाजशास्त्रीयो द्वारा विचार किया जाते रहे है इस संदर्भ में विशेष उल्लेखनीय नाम मदाम द स्ताल का है जिन्होंने साहित्य के दो मूल तत्व स्वातंत्रय भावना और सदाचार को प्रमुख माना साहित्य के विकास में वे मध्य वर्ग की भूमिका स्वीकार करते हैं।

फ्रांसीसी विचारक तेन साइट पर के समाजशास्त्र को एक वास्तविक दर्शनिक आधार प्रदान करते हैं वीडियो लियोंलावेन्थल लुसिए गोल्डमान और रेमण्ड विलियम्स आधी विचारक साहित्य के समाजशास्त्र को ऊँचाइयो तक पहुंचाने में अपना अमूल्य योगदान देते हैं लावेन्थल का मानना है की समाज व सामाजिक जनजीवन को समझने के लिए साहित्य सर्वाधिक प्रबल माध्यम है गोल्डमान के साहित्य के समाजशास्त्र का आधार विश्व दृष्टि की अवधारणा है रेमंड विलियम्स के लिए अनुभूति की संरचना महत्वपूर्ण है जिसके सहारे वे रचना के व्यक्तिक जीवंत और आत्म परख पक्षों पर विचार करते हैं।

टेरीइगल्टन के अनुसार साहित्य के समाजशास्त्र को समझने की दो दृष्टियां हो सकती हैं पहली यथार्थवादी दृष्टि जिसके अनुसार साहित्य के सामाजिक संदर्भों का गहराई से अध्ययन होता है इस विधि के अनुसार साहित्य का कोई भी आलोचनात्मक मूल्यांकन जिसमें इसके सामाजिक परिप्रेक्ष्य को नजरअंदाज किया गया हो सहज की अधूरी होगी उनके अनुसार साहित्य के अध्ययन की दूसरी दृ ष्टि हठाग्रही या उपयोगितावादी होती है इसके अनुसार साहित्य सभी तरह की वस्तुओं और सामाजिक संदर्भों से जुड़कर आकार ग्रहण करता है किंतु मूल्यांकन के लिए उसकी सामाजिक प्रतिबद्धताओं को खास तौर पर महत्व दिया जाता है एक खास सामाजिक दृष्टिकोण से देखने पर वह साहित्य उपयोगी और जरूरी महसूस होता है।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 6 Issue 12, December 2016
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

साहित्य समाज का वास्तविक और यथार्थ रूप को प्रस्तुत करता है जीवन के विभिन्न पहलुओं पर विचार करते हुए मानव जीवन को आत्मोन्नति के लिए उच्च कोटि के सिद्धांतों की स्थापना भी करता है साहित्य समाज का प्रतिबिंब है।

साहित्य का समाजशास्त्र 20 वीं सदी का अनुशासनात्मक विचार प्रणाली है जिसका उद्देश्य है साहित्य और समाज के संबंधों का वैज्ञानिक दृष्टि से विवेचन तथा विश्लेषण करना साहित्य और समाज का 11 संबंध है डॉक्टर मैनेजर पांडे का मानना है साहित्य के समाजशास्त्र का मुख्य उद्देश्य समाज से साहित्य के संबंध की खोज और उसकी व्याख्या साहित्य का साद्यय मानव हित से संबंधित है साहित्य को समाज का दर्पण भी कहा गया है साहित्य के माध्यम से ही साहित्यकार अपनी अनुभूतियों को यथार्थ पूर्ण एवं सुव्यवस्थित ढंग से अभिव्यक्त करता है जिस तरह समाजशास्त्र में सामाजिक संस्था और मनुष्य की अतः क्रियाओं का अध्ययन किया जाता है उसी तरह साहित्य को एक सामाजिक संस्था के रूप में अध्ययन का विषय बनाया जाता है साहित्यगत सरचना तथा सामाजिक सरंचनाओं में सामानान्तरता ढूंढना इसका मुख्य प्रतिपाद्य है ।

साहित्य अपने विविध रूपों से सामाजिक यथार्थ से जुड़कर जीवन का पुनः सृजन करता है साहित्य के समाजशास्त्रीय चिंतन का संदर्भ आधुनिक है साहित्यकार समाज को सचेतन बनाता है।

साहित्य का समाजशास्त्रीय अध्ययन के अंतर्गत सामाजिक संस्थाओं में सामाजिक प्रक्रियाओं के महत्व को स्वीकारा गया है जिस प्रकार समाजशास्त्र में मनुष्य के सामाजिक व्यवहार सामाजिक संस्थाओं मनुष्य की अतः प्रक्रियाओं एवं अंतः संबंधों का अध्ययन किया जाता है उसी प्रकार साहित्य एक सामाजिक संस्था के रूप में अध्ययन का विषय बनाया जाता है जिसमें धार्मिक आर्थिक राजनीतिक और पारिवारिक सभी संस्थाएं मनुष्य के सामाजिक जीवन से जुड़ी हुई है साहित्य के समाजशास्त्रीय अध्ययन के इतिहास में साहित्य की सामाजिक भूमि और भूमिका की खोज की पद्धतियों का विकास मुख्यतः तीन दिशाओ हुआ है वे तीन दिशाएं हैं साहित्य में समाज की खोज समाज में साहित्य तथा साहित्यकार की स्थिति का विवेचन और पाठक से साहित्य के संबंध का विश्लेषण साहित्य के समाजशास्त्र के संबंध में आधुनिक युग के भारतीय विद्वानों ने भी अपनी अपूर्व समाजशास्त्रीय चिंतन दृष्टि का परिचय दिया है जिसमें डी पी मुखर्जी पीसी जोशी श्याम चरण दुबे डॉ नगेंद्र रामविलास शर्मा आनंद कुमार स्वामी मैनेजर पांडे निर्मला जैन बच्चन सिंह आदि प्रमुख है इनके अतिरिक्त साहित्य को समाज के संदर्भ में देखने का प्रयास आचार्य रामचंद्र शुक्ल कथा हजारी प्रसाद द्विवेदी ने किया।

आचार्य रामचंद्र शुक्ल का साहित्य का समाजशास्त्र दृष्टिकोण महत्वपूर्ण है उन्होंने सामाजिक पृष्ठभूमि में रखकर कवियों और उनकी कृतियों तथा साहित्य की सामान्य प्रवृत्तियों को परखा

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 6 Issue 12, December 2016
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

आलोचना के संदर्भ में उन्होंने ने केवल समाज के लोग को प्रतिष्ठित किया वरन साहित्य की प्रकृति की रक्षा करते हुए दोनों के आंतरिक संबंधों की गहन व्याख्या की काव्य में लोकमंगल की भावना पर उनकी दृष्टि टिकी रही हजारी प्रसाद द्विवेदी स्वच्छंदतावादी समीक्षक होते हुए भी साहित्य को समाज के संन्दर्भ में देखने के पक्षधर है उन्होंने स्पष्ट कहा मैं साहित्य को मनुष्य की दृष्टि से देखने का पक्षपाती हूं उनका दृष्टिकोण मूलतः मानवतावादी है वे मानव एंव मानव समाज को समझने का एकमात्र साधन साहित्य को मानते हैं उनके अनुसार साहित्य उन सारी बातों का सजीव विवरण होता है जिसे मनुष्य ने देखा है अनुभव किया है सोचा और समझा है जीवन के दो पहलू हमें नजदीक से और स्थाई रूप से प्रभावित करते हैं उनके विषय में मनुष्य के अनुभवों को समझने का एकमात्र साधन साहित्य है अतः साहित्य के समाजशास्त्र के विकास को सामाजिक संदर्भ के साथ जोड़कर अध्ययन किया जाता है साहित्य में व्यक्ति के निजी अनुभव की अभिव्यक्ति समाज के संदर्भ में रूपांतरित होती है।

साहित्य और समाज के संबंध में इन विद्वानों ने न सिर्फ साहित्य के समाजशास्त्र के स्वतंत्र विकास की दिशा तय की बल्कि अपनी विभिन्न अवधारणाओं और चिंतन पद्धतियों से साहित्य के समाजशास्त्र के स्वरूप को गंभीर बनाया उसकी विश्लेषण क्षमता को समृद्ध किया।

साहित्य के समाजशास्त्र के अंतर्गत साहित्य के परिवर्तन और विकास का अध्ययन सामाजिक संदर्भों के अनुरूप होता है साहित्य और समाज के संबंधों के विश्लेषण के साथ–साथ समाजशास्त्र और साहित्य का समाजशास्त्र पर विचार करते हुए मैनेजर पांडे साहित्य के समाजशास्त्र की भूमिका पुस्तक में लिखते हैं साहित्य के इतिहास लेखन का जो संबंध समाज के इतिहास लेखन से है लगभग वही संबंध साहित्य के समाजशास्त्र का समाजशास्त्र से है साहित्य के इतिहास लेखन के विकास के लिए समाज के इतिहास लेखन के विकास के लिए समाज के इतिहास लेखन का विकास जरूरी है और साहित्य की समाजशास्त्रीय दृष्टि से विकास के लिए समाजशास्त्र का अतः साहित्य सृजन और चिंतन की सामाजिक भूमि को समझने के लिए साहित्य और चिंतन की सामाजिक भूमि को समझने के लिए साहित्य को ऐतिहासिक संदर्भ में देखने और विश्लेषण करने की पद्धति पर बल दिया गया है साहित्य के समाजशास्त्र की मुख्य प्रवृत्ति समग्रतावादी है साहित्यकार अपने ऐतिहासिक सामाजिक वैचारिक मंथन द्वारा साहित्य के सभी रूपों और पक्षों को समग्रता के साथ विवेचन करता है।

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि साहित्य के समाजशास्त्र का विकास साहित्य की सामाजिकता के संदर्भ में हुआ है साहित्य की सृजनात्मक में साहित्यकार सामाजिक संरचना का विश्लेषण करता है अतः साहित्य और समाजशास्त्र एक दूसरे से भिन्न नहीं है बल्कि दोनों का मुख्य सरोकार मनुष्य का सामाजिक जगत होता है मैनेजर पांडे के शब्दों में साहित्य का समाजशास्त्र साहित्यिक कृतियों को साहित्य की परंपरा के संदर्भ में नहीं देखता वह रचना को स्वतंत्र मानकर

**International Journal of Research in Social Sciences**
Vol. 6 Issue 12, December 2016
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

उसका विवेचन करता है अतः किसी भी साहित्यिक कृति के अंतर्वस्तु का विश्लेषण करने तथा सामाजिक संदर्भों को महत्वपूर्ण बनाने में साहित्य का समाजशास्त्र अपनी महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह करता है वैज्ञानिक दृष्टि से साहित्य को विशिष्ट महत्व प्रदान करता है।

सन्दर्भ पुस्तकें :–

1. अमरनाथ– हिंदी आलोचना की परिभाषिक शब्दावली राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली(2012)
2. मैनेजर पांडे– साहित्य के समाजशास्त्र की भूमिका हरियाणा साहित्य अकादमी (2006)
3. बच्चन सिंह– आधुनिक हिंदी आलोचना के बीज शब्द वाणी प्रकाशन नई दिल्ली (2004)
4. कश्मीरी लाल– साहित्य का समाजशास्त्रीय अध्ययन कथा सन्दर्भ भावना प्रकाशन दिल्ली (1993)
5. निर्मला जैन– साहित्य का समाजशास्त्रीय चिंतन।